सूक्तिसौरभम्

द्वितीयपुष्पम्

माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए

© NCERT not to be republished

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

पुरोवाक्

प्रस्तुत पुस्तकमाला "सूक्ति सौरभम्" (तीन खण्डों में) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के पूर्वत: सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग की लघुपुस्तकमाला योजना के अन्तर्गत तथा सम्प्रति भाषा विभाग के तत्त्वावधान में कक्षा 6-8, 9-10 तथा 11-12 के छात्रों के लिए पूरक पुस्तक के रूप में लिखी गई है। इसमें जीवनोपयोगी उन कालजयी सूक्तियों को संकलित किया गया है जो संस्कृत छात्रों के अतिरिक्त सामान्य संस्कृत जिज्ञासुओं के जीवन का मार्ग प्रशस्त करती हैं। एं सूक्तियाँ जितनी प्राचीन हैं उतनी ही नवीन हैं। इनके द्वारा छात्रों में मूल्य शिक्षा को देने का प्रयास किया गया है। इनमें आये विचार NCF 2005 की रूपरेखा के अनुरूप हैं। पुस्तकों में सूक्तियों के सरल हिन्दी तथा अंग्रेजी अनुवाद देकर छात्रों की कठिनाई का निवारण भी कर दिया गया है ताकि छात्र सूक्तियों के भावों को आसानी से हृदयंगम कर सकें। प्रथम खण्ड में वे सूक्तियाँ रखी गयी है जो सरल तथा सुकुमारमति छात्रों की बुद्धि के अनुरूप मूल्यों की शिक्षा प्रदान कर सके। द्वितीय खण्ड में थोड़ी उच्चस्तरीय सूक्तियों का संकलन किया गया है। जिन्हें अंग्रेजी तथा हिन्दी में अर्था सहित प्रस्तुत किया गया है। तृतीय खण्ड में द्वितीय खण्ड से भी उच्चस्तरीय सूक्तियों को संकलित किया गया है। हिन्दी तथा अंग्रेजी अनुवाद छात्रों की सुविधा के लिए वहाँ भी दिए गए है। इस तरह तीन खण्डों में प्रस्तुत यह सूक्ति सौरभम् पुस्तक माला क्रमश: कक्षा 6-8, 9-10 तथा 11-12 के छात्रों के पूरक पुस्तक के रूप में विकसित की गई है।

सूक्ति सौरभम् के द्वितीय खण्ड को प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक प्रशन्नता का अनुभव हो रहा है। पूर्व में पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन की प्राथमिकता के कारण इस पुस्तक को नहीं छापा जा सका था। मुझे विश्वास है कि परिषद् के स्वर्णजयन्ती वर्ष में इस पुस्तक का प्रकाशन संस्कृत छात्रों तथा सामान्य संस्कृत जिज्ञासुओं के लिए अत्यधिक लाभकारी सिद्ध होगा।

इस पुस्तक के प्रणयन में सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के पूर्व विभागाध्यक्षों सहित भाषा विभाग के अध्यक्ष का अनेकविध मार्गदर्शन रहा है। एतदर्थ पूर्वविभागाध्यक्षों सहित वर्तमान विभागाध्यक्ष हमारे साधुवाद के पात्र है। पुस्तक की सामग्री संकलन/पाण्डुलिपि निर्माणादि कार्यों में अनेकविध सहयोग के लिए श्रीमती उर्मिल खुङ्गर सहित भाषा विभाग के पूर्व संस्कृत आचार्य डॉ कमलाकान्त मिश्र तथा वर्तमान आचार्य डॉ. कृष्णचन्द्र त्रिपाठी तथा असिस्टैन्ट प्रोफेसर डॉ. रणजित बेहरा हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

पुस्तक की पाण्डुलिपि समीक्षा के लिए आयोजित गोष्ठियों में उपस्थित होकर जिन विषय विशेषज्ञों तथा अनुभवी संस्कृत अध्यापकों ने अपने बहुमूल्य सुझावों एवं परामर्श से सहयोग किया है, परिषद् उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती है।

पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तक का निर्माण एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। अत: पुस्तक को अधिकाधिक उपयोगी बनाने हेतु विशेषज्ञों एवं अध्यापको के अनुभव पर आधारित परामर्शों का सहर्ष स्वागत किया जाएगा तथा संशोधित संस्करण तैयार करते समय उनका समुचित उपयोग किया जाएगा।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

भूमिका

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है जिसका विशाल साहित्य (वेद, वेदांङ्ग, उपनिषद्, पुराण, विविध, शास्त्र, काव्य आदि) अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। यह उदात्त संस्कारों के साथ ही साथ शास्त्रीय ज्ञान तथा मौलिक चिन्तन का अगाध स्रोत भी है। इसमें विद्यमान सुभाषित भारतीय मनीषियों के ऐसे सुवचन हैं जो अनुभवों पर आधारित होने के कारण शाश्वत सत्य का उद्घाटन करते हैं तथा विषमता से युक्त इस जगत् में संकटमय किंकर्तव्यविमूढ़ मनुष्यों का मार्गदर्शन करते हैं। लोक-कल्याण के लिए प्रयुक्त ये सूक्तियाँ जीवन की विसंगतियों को सहज एवं सरल रूप से सुलझाने का कार्य करती हैं। इनमें नीति, कर्त्तव्य, सत्य, व्यवहार, परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्वबन्धुत्व सम्बन्धी अनेकानेक शाश्वत जीवनमूल्य विद्यमान हैं। जीवन के यथार्थ का दिग्दर्शन कराने वाली एवं नैतिक मूल्यों को मन-मस्तिष्क में आरूढ़ करने वाली इन सूक्तियों से लोकहित की सहज प्रेरणा मिलती है जिसकी सहायता से मनुष्य अपने जीवन में सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् की आलौकिक छबि प्रकट कर सकता है। भाषागत सरलता, भावों की सहजता तथा संवेदना की गहराई के साथ ही साथ अभिव्यक्ति की मनोरम शैली के कारण सूक्ति साहित्य निश्चय ही अतुलनीय है। उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता के श्लोक या उनके अंश, हितोपदेश, पञ्चतंत्र, नीतिशतक, चाणक्यनीति, विदुरनीति, शुक्रनीति आदि ग्रन्थ इस दृष्टि से विशेष रूप से अवलोकनीय हैं।

शुभचिन्तक मित्र की तरह संस्कृत सूक्तियाँ जन-जन का मार्गदर्शन करती हैं। ये जीवन में परिस्थिति-जनित समस्याओं का सद्यः समाधान सुझाकर मानव को सुख-शान्ति तथा सन्मार्ग की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान करती हैं। इनके लघु आकार में जन मानस के लिए व्यावहारिक संदेश तथा शाश्वत जीवनदर्शन के संकेत 'गागर में सागर' की भाँति समाए हुए हैं। इनकी मधुरता की प्रशंसा में एक सूक्ति है-

'तस्माद्धि काव्यं मधुरं तस्मादपि सुभाषितम्'

आज जबकि समाज में मानवीय-मूल्यों का ह्रास हो रहा है तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् इन मूल्यों को छात्रों तथा जन-सामान्य में विकसित करने हेतु कृत-संकल्प है, संस्कृत वाङ्मय से चयनित सूक्तियों का विशेष महत्त्व है। इसी उद्देश्य से पूरक पाठ्यसामग्री के विकासक्रम में संस्कृत लघुपुस्तकमाला योजना के अन्तर्गत विभिन्न शास्त्रों से एवं छात्रों के बौद्धिक स्तर के अनुरूप सुसज्जित **सूक्ति सौरभम्** नामक सुभाषित संग्रह तीन खण्डों में क्रमशः प्रथम खण्ड, द्वितीय खण्ड तथा तृतीय खण्ड के रूप में विकसित किया गया है।

© NCERT not to be republished

विषयानुक्रमणी

1.	आत्म-विश्वासः	नाभिषेको न...	1
2.	आरोग्यसाधनं तक्रम्	न तक्रसेवी...	2
3.	उत्तमजनः	वज्रादपि कठोराणि...	3
4.	उत्साहः	उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रं...	4
5.	कुसंगति-परित्यागः	वरं पर्वतदुर्गेषु...	5
6.	गुण-गारिमा	गुणा गुणज्ञेषु गुणा...	6
7.	विपत्तिमार्गः	परनिन्दासु...	7
8.	जीवनमूल्यानि	नास्ति विद्यासमं...	8
9.	त्यागः	नास्ति भूमिसमं दानं...	9
10.	धीरवैशिष्ट्यम्	वश्येन्द्रियं...	10
11.	क्रियाशीलता	शास्त्राण्यधीत्यापि...	11
12.	सत्पुरुषाः	सर्वभूतदयावन्तो...	12
13.	अभयदानम्	न गोप्रदानं न...	13
14.	दुर्जनः	खलः सर्षपमात्राणि...	14
15.	दूरदर्शिता	अप्राप्तकालं वचनं...	15
		सहसा विदधीत...	16
16.	महापुरुषः	उदेति सविता...	17
17.	भारतमहिमा	गायन्ति देवाः...	18
18.	धीरलक्षणम्	निन्दन्तु नीतिनिपुणाः...	19
19.	शुद्धिः	अद्भिर्गात्राणि...	20
20.	मनस्विता	कामं प्रियानपि...	21
21.	मातृभक्तिः	यं माता...	22
22.	मातृभूमिः	ग्रीष्मस्ते भूमे...	23

© NCERT not to be republished

23.	अष्टौ गुणाः	अष्टौ गुणाः...	24
24.	अनर्थकारणम्	यौवनं धनसम्पत्तिः..	25
25.	मित्रता	पापान्निवारयति...	26
		प्रीतिर्नो वर्धतां...	27
26.	धनदुःखत्वम्	अर्थानामर्जने...	28
27.	गुणपूजा	यस्य कस्य...	29
28.	राक्षसी वाणी	ऋषयो राक्षसीमाहुः...	30
29.	सूनृता वाणी	कामान्दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मीं...	31
30.	वाणीकौशलम्	वचस्तत्र...	32
31.	विद्यामहिमा	विद्यानाम नरस्य	33
32.	शौर्यम्	एकेनापि हि शूरेण...	34
33.	संहतिः	अथ ये संहता...	35
		अल्पानामपि वस्तूनां...	36
34.	सज्जनः	मनसि वचसि काये...	37
		शरदि न...	38
35.	सत्यनिष्ठा	न सा सभा...	40
		नासत्यवादिनः	41
36.	सत्संगतिः	चन्दनं शीतलं लोके...	42
37.	वैरशान्तिः	न हि वैरेण वैराणि	43
38.	सदाचारः	पातितोऽपि कराघातै...	44
		शान्तितुल्यं तपोनास्ति...	45
39.	पुरुषपरीक्षा	यथा चतुर्भिः...	46
40.	सर्वसमभावः	संगच्छध्वं संवदध्वं...	47
41.	श्रेष्ठज्ञानी	अज्ञेभ्यो ग्रन्थिनः श्रेष्ठा...	48

© NCERT not to be republished

1. आत्म-विश्वासः

नाभिषेको न संस्कारः
सिंहस्य क्रियते वने।
विक्रमार्जितसत्त्वस्य
स्वयमेव मृगेन्द्रता॥1॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम्-7)
(गरुडपुराणम्-शौनकनीतिसारः-115/15)

जंगल में शेर का न राज्याभिषेक किया जाता है और न ही कोई संस्कार। पराक्रम से प्राप्त बल वाले सिंह का मृगराज होना स्वतः सिद्ध है।

In the forest none performs either the coronation or the adornment of the lions. He is king of all animals automatically because of his valour earned from his strength.

© NCERT not to be republished

2. आरोग्यसाधनं तक्रम्

न तक्रसेवी व्यथते कदाचित्,
न तक्रदग्धाः प्रभवन्ति रोगाः।
यथा सुराणाममृतं प्रधानं,
तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः॥2॥

(कस्यचित्)

तक्र (मट्ठा) सेवन करने वाला कदापि रोग-पीड़ित नहीं होता, तक्र द्वारा नष्ट किये गये (उदर के) रोग फिर से उत्पन्न नहीं होते। जैसे देवताओं के लिए अमृत प्रधान है वैसे ही इस पृथ्वी पर मनुष्यों को (नीरोग रखने के लिए) मट्ठा (अर्थात् छाछ) महत्त्वपूर्ण है।

One who drinks butter-milk never falls, prey to any disease and ailments (of stomach) destroyed by the butter-milk do not arise again. As nector is important for the Gods, so is the butter-milk for the human beings on this earth.

© NCERT not to be republished

3. उत्तमजनः

वज्रादपि कठोराणि,
मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि,
को हि विज्ञातुमर्हति॥3॥

(उत्तररामचरितम्, अंक–2, श्लोकः –7)

उत्तम जनों के हृदय वज्र से भी कठोर तथा पुष्प से भी कोमल होते हैं। उनकी चित्तवृत्ति को जानने में भला कौन समर्थ हो सकता है?

The heart of extra-ordinary persons is harden than a thunder-bolt and more delicate than a flower. Who can know the state of minds of such extra-ordinary persons?

© NCERT not to be republished

4. उत्साहः

उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रं
क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम्।
शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च,
लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः॥4॥

(सुभाषितावलिः, पृ. 49, श्लोकः -315)

उत्साह से परिपूर्ण, कार्य में देर न करने वाले, कार्य की विधि को जानने वाले,व्यसनों में अनासक्त, पराक्रमी, किए हुए उपकार को समझने वाले तथा स्थिर मैत्री वाले व्यक्ति के पास लक्ष्मी स्वयं निवास करने आती है।

Fortune itself comes to stay with the one who is enthusiatic, prompt, knower of methods, detached from vices, brave, grateful and steadfast in friendship.

© NCERT not to be republished

5. कुसंगति-परित्यागः

वरं पर्वतदुर्गेषु,
भ्रान्तं वनचरैः सह।
न मूर्खजनसम्पर्कः,
सुरेन्द्रभवनेष्वपि॥5॥

(नीतिशतकम्, श्लोकः -14)

वनचरों (जंगल के निवासियों) के साथ दुर्गम पर्वतों में घूमते रहना अच्छा है (परन्तु) मूर्ख व्यक्ति के साथ देवराज इन्द्र के महल में भी रहना अच्छा नहीं।

It is better to move aimlessly in the company of forest-dwellers in difficult mountains, than to have the company of silly-persons even in the palace of Indra, the king of gods.

© NCERT not to be republished

6. गुण-गरिमा

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
आस्वाद्यतोयाः प्रभवन्ति नद्यः,
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः॥6॥

(हितोपदेशः, प्रस्ताविका, श्लोकः -45)

गुणियों की संगति में गुण, गुण ही रहते हैं किन्तु गुणहीन व्यक्ति की संगति में वे ही दोष बन जाते हैं। नदियों का जल मीठा होता है किन्तु वही समुद्र में मिल जाने पर पीने योग्य नहीं रह जाता।

Merits remain merits in the company of the meritorious but in the company of a man with no quality merits become demerits. Water of a river is sweet but it becomes undrinkable after it merges into the sea.

© NCERT not to be republished

7. विपत्तिमार्गः

परनिन्दासु पाण्डित्यं,
स्वेषु कार्येष्वनुद्यमः।
प्रद्वेषश्च गुणज्ञेषु,
पन्थानो ह्यापदां त्रयः॥7॥

(सुभाषितावलिः, श्लोकः -2739)

दूसरों की निन्दा करने में निपुणता, अपने कार्य में आलस्य तथा गुणज्ञ व्यक्तियों से द्वेष, ये तीनों ही आपत्तियों के मार्ग हैं।

Mastery in abusing others, lazy in his own work and hostile with virtuous people, are the causes of misfortunes.

© NCERT not to be republished

8. जीवनमूल्यानि

नास्ति विद्यासमं चक्षुः,
नास्ति सत्यसमं तपः।
नास्ति रागसमं दुःखं,
नास्ति त्यागसमं सुखम्॥8॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् पृ.167, श्लोकः -624)

विद्या के समान कोई नेत्र नहीं, सत्य के समान कोई तप नहीं, आसक्ति (राग) के समान कोई दुःख नहीं और त्याग के समान कोई सुख नहीं है।

There is no eye like knowledge, no penance like truth, no sorrow like attachment and there is no happiness like sacrifice.

© NCERT not to be republished

9. त्यागः

नास्ति भूमिसमं दानं,
नास्ति मातृसमो गुरुः।
नास्ति सत्यसमो धर्मो,
नास्ति दानसमो निधिः॥8॥

(महाभारतम्–सू.सुधा, 62/92)

भूमिदान के समान कोई दान नहीं, माता के समान कोई गुरु नहीं, सत्य के समान कोई धर्म नहीं और दान के समान कोई कोश नहीं है।

There is no charity equal to donation of land, there is no teaher equal to mother, there is no virtue equal to truth and there is no treasure equal to charity.

© NCERT not to be republished

10. धीरवैशिष्ट्यम्

वश्येन्द्रियं जितात्मानं,
धृतदण्डं विकारिषु।
परीक्ष्यकारिणं धीर
अत्यन्तं श्रीर्निषेवते॥10॥

(सुभाषितावलिः, पृ. 441, श्लोकः-2649)

जितेन्द्रिय, आत्मजयी, दुष्टों को दण्ड देने वाले तथा प्रत्येक कार्य को सोच-विचार कर करने वाले धीर (बुद्धिमान्) पुरुष को लक्ष्मी स्थायी रूप से अपना लेती है।

One who has control over his senses and the self, punishes the culprits and does his work rationally, becomes constant resort of fortune.

© NCERT not to be republished

11. क्रियाशीलता

शास्त्राण्यधीत्यापि भवन्ति मूर्खाः,
यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान्।
सुचिन्तितं चौषधमातुराणां,
न नाममात्रेण करोत्यरोगम्॥11॥

(हितोपदेशः, मित्रलाभः, श्लोकः-168)

शास्त्रों का अध्ययन करने पर भी लोग मूर्ख रह जाते हैं। वही वस्तुतः विद्वान् है जो व्यवहार-कुशल है। जैसे सुचिन्तित औषधि से रोगी रोगमुक्त होता है; न कि उसका नाम लेने मात्र से।

Even after studying the Shastras people remain fool. Only that man is learned who puts his knowledge into practice. Properly prescribed medicine can cure the patient not mere mentioning of its name can cure the patient.

© NCERT not to be republished

12. सत्पुरुषाः

सर्वभूतदयावन्तो,
विश्वास्याः सर्वजन्तुषु।
त्यक्तहिंसाः समाचारास्ते,
नराः स्वर्गगामिनः॥12॥

(महा.अनु.144.9)

जो सब प्राणियों पर दया करते हैं, सब जीवों के विश्वास-पात्र होते हैं, जिन्होंने हिंसा को त्याग दिया है तथा जो सदाचारी हैं, वे व्यक्ति स्वर्ग (सद्गति) प्राप्त करते हैं।

Those persons attain heaven who are kind to all living beings, who are trusted by all and who have given up violence and are of good conduct.

© NCERT not to be republished

13. अभयदानम्

न गोप्रदानं न महीप्रदानं,
न चान्नदानं हि तथा प्रधानम्।
यथा वदन्तीह बुधाः प्रधानं,
सर्वप्रदानेष्वभयप्रदानम्॥13॥

(पञ्चतंत्रम्,मित्रभेदः, 3/31)

विद्वान् लोग इस संसार में गोदान, पृथ्वीदान और अन्नदान को वैसा प्रधान नहीं मानते जैसा सभी दानों में अभयदान को मुख्य मानते हैं।

In this world, the noble persons do not regard the gift of a cow or land or food so important as the grant of fearlessness, the best of all the gifts.

© NCERT not to be republished

14. दुर्जनः

खलः सर्षपमात्राणि,
परच्छिद्राणि पश्यति।
आत्मनो बिल्वमात्राणि,
पश्यन्नपि न पश्यति॥14॥

(व्यासस्य, सुभाषितरत्नभाण्डागारम्, 56/1)

दुष्ट व्यक्ति दूसरों के सरसों के बराबर छोटे दोषों को भी देख लेते हैं, परंतु अपने बिल्वफल के समान बड़े दोषों को देखते हुए भी नहीं देख पाते।

The wicked people see the faults of others even as small as mustard seed, but do not see their own faults as big as Bilva fruits, although knowing them well.

© NCERT not to be republished

15. दूरदर्शिता

अप्राप्तकालं वचनं,
बृहस्पतिरपि ब्रुवन्।
प्राप्नोति बुद्ध्यवज्ञानम्,
अपमानं च शाश्वतम्॥15॥

(पञ्चतंत्रम्,मित्रभेदः, श्लोकः-67)

अनुचित समय पर बोलते हुए बृहस्पति को भी अपनी बुद्धि की अवहेलना झेलनी पड़ती है और निरन्तर अपमानित होना पड़ता है।

Even Brihaspati (The sage of wisdom and teacher of gods), when speakes untimely, suffers disregard to his intellect and suffers constant insult.

© NCERT not to be republished

सहसा विदधीत न क्रियाम्,
अविवेकः परमापदां पदम्।
वृणुते हि विमृश्यकारिणं,
गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः॥16॥

(किरातार्जुनीयम्, सर्गः -2, श्लोकः -30)

अकस्मात् अर्थात् बिना विचारे कोई कार्य नहीं करना चाहिए क्योंकि अविवेक ही विपत्तियों का परम स्थान है। विचारपूर्वक कार्य करने वाले व्यक्ति के गुणों से आकृष्ट होकर सम्पत्तियाँ स्वयम् उसे अपना लेती हैं।

One should not do any thing in rashness. For rashness is the adobe of misfortune. The fortune itself owns him attracted by good qualities of the wise person working thoughtfully

© NCERT not to be republished

16. महापुरुषः

उदेति सविता ताम्र,
स्ताम्रएवास्तमेति च।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च,
महतामेकरूपता॥17॥

(सुभाषितावलिः, 37/220)

सूर्य लालवर्ण का ही उदित होता है और लालवर्ण का ही अस्त होता है। सम्पत्ति और विपत्ति इन दोनों में महान् पुरुष एक जैसे रहते हैं।

The sun is red, when it rises as well as when it sets. The great people remain the same both in their prosperity and adversity.

© NCERT not to be republished

17. भारतमहिमा

गायन्ति देवाः किल गीतकानि,
धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते,
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥18॥

(विष्णुपुराणम्, खण्डम्-2, अध्यायः -3, श्लोकः -24)

देवगण भी निश्चय ही यह गीत गाते हैं कि वे मनुष्य धन्य हैं जो देवत्व को त्यागकर स्वर्ग और मोक्ष के साधनभूत भारत-भूमि में पुनः-पुनः जन्म लेते हैं।

Even Gods sing this "Blessed are those, who, having abandoned godhood are born again and again as men in the land called Bharata which paves the way to the Heaven and the salvation."

© NCERT not to be republished

18. धीरलक्षणम्

निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥19॥

(नीतिशतकम्, श्लोकः -84)

नीति निपुण व्यक्ति चाहे निन्दा करें या प्रशंसा, इच्छानुसार चाहे लक्ष्मी आए या चली जाए, आज ही मृत्यु हो जाए अथवा कालान्तर में, धीर पुरुषों के कदम कभी भी न्याय के पथ से विचलित नहीं होते।

Men conversant with worldly affairs, may condemn or admire, fortune may come or go away from them, death may come today or after a long time, noble persons never deviate from the path of justice.

© NCERT not to be republished

19. शुद्धिः

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति,
मनः सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा,
बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति॥20॥

(मनुस्मृतिः, अध्यायः -5, श्लोकः -108)

शरीर जल से शुद्ध होता है, मन सत्य से शुद्ध होता है। प्राणियों की आत्मा विद्या और तप से शुद्ध होती है तथा बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है।

The body is purified by water, the mind is purified by truth, the soul is purified by learning and austerities and intellectis is purified by knowledge.

© NCERT not to be republished

20. मनस्विता

कामं प्रियानपि प्राणान्,
विमुञ्चन्ति मनस्विनः।
इच्छन्ति न त्वमित्रेभ्यो,
महतीमपि सत्क्रियाम्॥21॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम्, 83/1)

मनस्वी पुरुष स्वेच्छा से अपने प्रिय प्राणों का भी परित्याग कर देते हैं, किन्तु शत्रुओं से बड़े-से-बड़ा सत्कार भी नहीं चाहते।

The high-minded people are ready even to give up their dear lives, but they do not desire even the greatest honour from their enemies.

© NCERT not to be republished

21. मातृभक्तिः

यं माता - पितरौ क्लेशं,
सहेते सम्भवे नृणाम्।
न तस्य निष्कृतिः शक्या,
कर्तुं वर्षशतैरपि॥22॥

(मनुस्मृतिः, अध्यायः -2, श्लोकः -227)

मानव को जन्म देने में माता-पिता जितना कष्ट सहते हैं, उसका ऋण सैकड़ों वर्षों में भी नहीं चुकाया जा सकता।

The pain which the parents undergo during the birth of their children cannot be compensated even in hundreds of years.

© NCERT not to be republished

22. मातृभूमिः

ग्रीष्मस्ते भूमे! वर्षाणि
शरद्धेमन्तः शिशिरो वसन्तः।
ऋतवस्ते विहिता हायनीरहोरात्रे
पृथिवी नो दुहाताम्॥23॥

(अथर्ववेदः, 12/1/36)

हे मातृभूमे ! तुम पर जो वर्ष भर में ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर और वसन्त – ये छह ऋतुएँ आती हैं और जो दिन-रात होते हैं, वे हमें सदा उत्कर्ष प्रदान करें।

O Motherland! may the six seasons like Grishma (Summer), Varsha (rains), Sharad (Autumn) Hemanta (early winter), Shishira (Winter) and Vasant (Spring) coming in a year and day and night bestow upon us all prosperities.

© NCERT not to be republished

23. अष्टौ गुणाः

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति,
प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च।
पराक्रमश्चाबहुभाषिता च,
दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च॥24॥

(महाभारतम्, उद्योगपर्व अध्यायः -33, श्लोकः -11)

बुद्धिमत्ता, अच्छे कुल में जन्म, इन्द्रियों पर संयम, शास्त्रों का ज्ञान, वीरता, मितभाषण, यथाशक्ति दान और कृतज्ञता - ये आठ गुण मानव के जीवन को उज्ज्वल करते हैं।

Intelligence, birth in a noble family, control over the senses, knowledge of Shastras, bravery, moderate speech charity according to ones capacity and sense of gratitude are the eight qualities which illuminate the life of a man.

© NCERT not to be republished

24. अनर्थकारणम्

यौवनं धनसम्पत्तिः,
प्रभुत्वमविवेकिता।
एकैकमप्यनर्थाय,
किमु यत्र चतुष्टयम्॥25॥

(हितोपदेशः, प्रस्ताविका, श्लोकः-11)

यौवन, धन, सम्पत्ति, अधिकार और विवेक-शून्यता इनमें से एक-एक भी अपने आप में अनर्थकारी होता है, ये चारों जहाँ हों, वहाँ तो कहना ही क्या?

Youth, abundance of wealth, power and lack of wisdom are the sources of calamity even singly. What to say where all the four are present?

© NCERT not to be republished

25. मित्रता

पापान्निवारयति योजयते हिताय,
गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले,
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः॥26॥

(नीतिशतकम्, श्लोकः -73)

जो पाप से हटाता है, हित-कार्यों में लगाता है, गोपनीय बातों को गुप्त रखता है, गुणों की प्रकाशित करता है, आपत्ति के समय साथ नहीं छोड़ता तथा समय पर सहायता करता है, सज्जन ऐसे मित्र को सच्चा मित्र कहते हैं।

The noble people describe a good friend as one who prevents his friend from committing sins, enjoins him in beneficial actions, conceals his secrets, exhibits his merits, never parts with him in adversity and helps him when in need.

© NCERT not to be republished

प्रीतिर्नो वर्धतां नित्यं,
वयं सर्वे सहोदराः।
इति मैत्रीमयी बुद्धिः,
सद्भावादुपजायते॥27॥

(हितोपदेशः, पृ.311)

हमारी प्रीति नित्यप्रति बढ़े, हम सब सहोदर (भाई) हैं, ऐसी मैत्रीपूर्ण बुद्धि सद्भाव से उपजती है।

"Let our mutual affection develop forever; we all are brothers" such friendly feelings grow through good feelings.

© NCERT not to be republished

26. धनदु:खत्वम्

अर्थानामर्जने दु:खम्
अर्जितानां च रक्षणे।
नाशे दु:खं व्यये दु:खं
धिगर्थदु:खभाजनम्॥28॥

(महाभारतम्, सू.सु.अ.145, अनुशासनपर्व)

धन के उपार्जन में कष्ट होता है, अर्जित धन की रक्षा में कष्ट होता है, धन के नाश और व्यय में भी दु:ख होता है। दु:ख के पात्र इस धन को धिक्कार है।

There is pain in earning wealth, there is pain in the preservation of what is earned. There is pain when it is lost or when it is spent. Fie upon the wealth, which is the source of the pains.

© NCERT not to be republished

27. गुणपूजा

यस्य कस्य प्रसूतोऽपि
गुणवान् पूज्यते नरः।
धनुर्वंश-विशुद्धोऽपि
निर्गुणः किं करिष्यति॥29॥

(हितोपदेशः, प्रस्ता.23)

किसी भी कुल में पैदा हुआ मनुष्य यदि गुणवान् है, तभी वह पूजा जाता है। अच्छे बाँस से बना धनुष, यदि गुण (रस्सी-प्रत्यञ्चा) विहीन है तो वह किसी काम का नहीं होता।

Whatever may be the geneology of a person, he is respected only because of his virtues, just as a bow made of superior quality bamboo, is of no use, if it does not have a string (गुण) rope tied up with it.

© NCERT not to be republished

28. राक्षसी वाणी

ऋषयो राक्षसीमाहुः
वाचमुन्मत्तदृप्तयोः।
सा योनिः सर्ववैराणां,
सा हि लोकस्य निर्ऋतिः॥30॥

(उत्तररामचरितम्, अंकः -5, श्लोकः -30)

उन्मत्त और अभिमानी व्यक्ति के वचन को ऋषियों ने राक्षसी वाणी कहा है, क्योंकि ऐसी वाणी सभी झगड़ों की जड़ है तथा संसार के विनाश का कारण है।

The speech of the arrogant and the proud has been described as devilish by the Sages, as this is the root of all enmity and the cause of destruction of the world.

© NCERT not to be republished

29. सूनृता वाणी

कामान्दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मीं,
कीर्तिः सूते दृष्कृतं या हिनस्ति।
शुद्धां शान्तां मातरं मङ्गलानां
धेनुं धीराः सूनृतां वाचमाहुः॥31॥

(उत्तररामचरितम्, अंकः -5, श्लोकः -30)

बुद्धिमान् लोग शुद्ध, शान्त (अनुत्तेजक) कल्याण करने वाली और सत्यप्रिय वाणी को धेनु (कामधेनु) कहते हैं। वह हमारी इच्छाओं को पूर्ण करती है, दरिद्रता को दूर करती है, यश प्रदान करती है तथा पापों को नष्ट करती है।

Men of wisdom have described the speech, which is pure, soothing, bestower of well-being, pleasant and truthful, as the cow (Kamadhenu) which bestows everything. It fullfils all desires, removes poverty, brings forth glory and destroys all sins.

© NCERT not to be republished

30. वाणीकौशलम्

वचस्तत्र प्रयोक्तव्यं,
यत्रोक्तं लभते फलम्।
स्थायी भवति चात्यन्तं,
रागः शुक्लपटे यथा॥32॥

(पञ्चतंत्रम्, मित्रभेदः, श्लोकः -34)

वाणी का वहीं प्रयोग करना चाहिए जहाँ वह वैसे ही सफल हो जैसे सफेद कपड़े पर लाल रंग अत्यन्त पक्का होता है।

Words should be uttered only when they bear fruit on their delivery, just as the impression of the red colour becomes permanent on a white cloth.

© NCERT not to be republished

31. विद्यामहिमा

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं,
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतं,
विद्या राजसु पूज्यते नहि धनं विद्याविहीनः पशुः॥33॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम्, 31.15)

विद्या मनुष्य का विशिष्ट सौन्दर्य और छिपा हुआ धन है। यह भोग प्रदान करती है, यश और सुख देती है तथा गुरुओं की भी गुरु है। विदेश जाने पर विद्या बन्धुजन के समान है, वह उत्तम देवता है। विद्या राजाओं के द्वारा पूजी जाती है, धन नहीं। विद्यारहित व्यक्ति पशु (तुल्य) है।

Learning is the speific grace (charm) of man and the most secret treasure. It gives enjoyment, fame and happiness. It is teacher of teachers, it is a great friend in distant lands. It is the highest deity. Even in the royal courts it is the learning which is respected and not the wealth. A person without learning is (like) an animal.

© NCERT not to be republished

सर्वद्रव्येषु विद्यैव
द्रव्यमाहुरनुत्तमम्।
अहार्यत्वादनर्घ्यत्वाद्,
अक्षयत्वाच्च सर्वदा॥34॥

(हितोपदेशः, प्रस्ताविका, श्लोकः -4)

सभी सम्पत्तियों में विद्या ही सर्वोत्तम सम्पत्ति है। क्योंकि इसे कभी कोई छीन नहीं सकता, न इसके लिए कोई मूल्य चुकाने की आवश्यकता होती है और न इसका कभी विनाश होता है।

Of all the assettes the Learning is the best assest. It can never be stolen, nor one has to pay anything for it, nor it can never perish.

© NCERT not to be republished

32. शौर्यम्

एकेनापि हि शूरेण,
पादाक्रान्तं महीतलम्।
क्रियते भास्करेणेव,
स्फारस्फुरिततेजसा॥35॥

(नीतिशतकम्, श्लोकः -107)

जिस प्रकार एक ही देदीप्यमान सूर्य के तेज से समस्त भूमण्डल आक्रान्त हो जाता है उसी प्रकार एक ही तेजस्वी शूर के चरणों के तले समस्त विश्व आ जाता है।

A valiant person trounces the whole world by his feet as the radiant sun illuminates the entire universe by its rays.

© NCERT not to be republished

33. संहतिः

अथ ये संहता वृक्षाः,
सर्वतः सुप्रतिष्ठिताः।
न ते शीघ्रेण वातेन,
हन्यन्ते ह्येकसंश्रयात्॥35॥

(पञ्चतंत्रम्, काकोलूकीयम्, श्लोकः -35)

जो वृक्ष एक साथ और अच्छी तरह बद्ध-मूल हैं, वे एक साथ जुड़े होने के कारण तेज आँधी से भी नष्ट नहीं होते।

The trees which stand together and are deep-rooted cannot be uprooted even by strong winds, because they stand united.

© NCERT not to be republished

अल्पानामपि वस्तूनां,
संहतिः कार्यसाधिका।
तृणैर्गुणत्वमापन्नैः,
बध्यन्ते मत्तदन्तिनः॥37॥

(हितोपदेशः, मित्रलाभः -35)

छोटी-छोटी वस्तुएँ जब मिल जाती हैं, तो उनसे बड़े-बड़े काम सिद्ध हो जाते हैं। जैसे रस्सी तिनको से बनती है और उससे शक्तिशाली हाथी भी बांधे जाते हैं।

Very small things when united can do great things, just as a rope made of small pieces of straws can bind even a giant elephant.

© NCERT not to be republished

34. सज्जनः

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः,
त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं,
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः॥38॥

(नीतिशतकम्, श्लोकः -79)

ऐसे सज्जन संसार में कितने हैं जिनके मन, वचन और शरीर पुण्यरूपी अमृत से पूर्ण हैं, जो अपने उपकारों (की परम्परा) से तीनों लोकों को तृप्त करते हैं, जो दूसरों के परमाणु जैसे छोटे गुणों को भी पर्वत के समान (बड़े) समझकर अपने हृदय में सदा ही प्रसन्न रहते हैं।

How many noble persons are there, whose body, mind and words are filled with nector of virtuous deeds who please everybody by their series of obligations and who consider even atom like small virtues of others as big as mountain, and thus they become happy.

© NCERT not to be republished

शरदि न वर्षति गर्जति,
वर्षति वर्षासु निःस्वनो मेघः।
नीचो वदति न कुरुते,
न वदति सुजनः करोत्येव ॥39॥

(शाङ्र्गधरपद्धतिः, श्लोकः -245)

शरत् काल में बादल गरजता तो है किन्तु बरसता नहीं और वर्षा ऋतु में वह गरजता नहीं, अपितु बरसता है। उसी प्रकार नीच व्यक्ति कहता तो है किन्तु करता कुछ नहीं और सज्जन कहता तो कुछ नहीं, किन्तु करता अवश्य है।

The cloud does not rain in the autumn, it thunders only, but in the rainy season it rains without thunder. Likewise a wicked person only speaks and does nothing, while a noble man never speaks but acts only.

© NCERT not to be republished

35. सत्यनिष्ठा

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः,
वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।
धर्मः स नो यत्र न सत्यमस्ति,
सत्यं न तद्यच्छलमभ्युपैति॥40॥

(हितो., विग्रह 61)

वह सभा, सभा नहीं जिसमें कोई वृद्ध नहीं, वे वृद्ध, वृद्ध नहीं जो धर्म की बात नहीं बोलते, वह धर्म, धर्म नहीं जिसमें सत्य न हो और वह सत्य, सत्य नहीं जो कपटयुक्त हो।

That assembly is of no use where there are no wise old men; the old men are worthless if they do not speak what is just (Dharma); that justice (Dharma) is of no value if it is devoid of truth and that truth is worthless which is full of deceit

© NCERT not to be republished

नासत्यवादिनः सख्यं,
न पुण्यं न यशो भुवि।
दृश्यते नापि कल्याणं,
कालकूटमिवाश्नतः।।41।।

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम्, पृ.83, असत्यनिन्दा)

विषपान करने वाले व्यक्ति की भाँति असत्य बोलने वाले व्यक्ति को न तो मैत्री मिलती है, न पुण्य, न यश और न ही कल्याण प्राप्त होता है।

Person who tells lies, has neither friendship nor virtue nor fame nor welfare like one who has consumed poison.

© NCERT not to be republished

36. सत्संगतिः

चन्दनं शीतलं लोके,
चन्दनादपि चन्द्रमाः।
चन्द्रचन्दनयोर्मध्ये,
शीतला साधुसंगतिः॥42॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम्, पृ.86,
सत्संगतिप्रशंसा, श्लोकः-6)

इस संसार में चन्दन शीतल है, चन्द्रमा चन्दन से भी शीतल है। सज्जनों की संगति चन्द्रमा और चन्दन से भी अधिक शीतल है।

The sandalwood is cool in this world, the moon is cooler than the sandalwood. But the company of the nobleman is cooler than the moon and the sandalwood.

© NCERT not to be republished

37. वैरशान्तिः

न हि वैरेण वैराणि,
शाम्यन्तीह कदाचन।
अवैरेण तु शाम्यन्ति,
एष धर्मः सनातनः॥43॥

(धम्मपदम्, अनूदित)

इस संसार में शत्रुता कभी भी शत्रुता के द्वारा शान्त नहीं होती। वह तो प्रेमभाव से ही शान्त होती है। यही शाश्वत धर्म है।

In this world hostility can never be pacified by hostility. This can be pacified only by being non hostile. Herein lies the eternal truth.

© NCERT not to be republished

38. सदाचारः

पातितोऽपि कराघातै
रुत्पतत्येव कन्दुकः।
प्रायेण हि सुवृत्तानाम्अस्थायिन्यो विपत्तयः॥44॥

(सुभाषितावलिः, 37-222)

हाथ के आघात से बार-बार नीचे की ओर फेंकी गयी गेंद ऊपर ही उछलती है। सदाचार से सम्पन्न व्यक्तियों की विपत्तियाँ प्रायः अस्थायी होती हैं।

The ball does bounceup when it is struck down again and again by the stroke of the hand (similarly) adversities of the virtuous are generally temporary.

© NCERT not to be republished

शान्तितुल्यं तपो नास्ति,
न सन्तोषात् परं सुखम्।
न तृष्णायाः परो व्याधिः,
न च धर्मो दयापरः॥45॥

(चाणक्यनीतिः)

शान्ति के समान कोई तप नहीं है, संतोष से बढ़कर कोई सुख नहीं है, तृष्णा (लालच) से बड़ी कोई बीमारी नहीं है और दया से बढ़कर कोई धर्म नहीं है।

There is no penance like peace, no happiness like contentment, no disease like lust and there is no Dharma like kindness.

© NCERT not to be republished

39. पुरुषपरीक्षा

यथा चतुर्भिः कनकं परीक्ष्यते,
निघर्षणच्छेदनतापताडनैः।
तथा चतुर्भिः पुरुषः परीक्ष्यते,
त्यागेन शीलेन गुणेन कर्मणा॥46॥

(चाणक्यनीतिः, श्लोकः -512)

घिसने, छेदने, तपाने और पीटने के चार प्रकारों से जैसे स्वर्ण की परीक्षा की जाती है वैसे ही त्याग, शील, गुण और कर्म से पुरुष की परीक्षा की जाती है।

The gold is tested in four ways - rubbing, cutting, heating and striking in the same way a man is tested through charity, good conduct, merit and action.

© NCERT not to be republished

40. सर्वसमभावः

संगच्छध्वं संवदध्वं,
सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथापूर्वे,
संजानाना उपासते॥47॥

(ऋग्वेदः, मण्डलम्-10, सूक्तम्-191, मन्त्रः-2)

तुम सभी साथ मिलकर चलो, एक साथ मिलकर बोलो, तुम सभी के मन समान विचार वाले हों। जिस प्रकार पूर्व काल में दिव्य देवताओं ने समान विचार रखते हुए अपना-अपना अभीष्ट हव्यभाग प्राप्त किया है, उसी प्रकार तुम लोग भी सहमतिपूर्वक सम्पन्नता प्राप्त करो।

Move together, speak together, let your minds be of one accord as gods in past have also got their oblations while thinking together.

© NCERT not to be republished

41. श्रेष्ठज्ञानी

अज्ञेभ्यो ग्रन्थिनः श्रेष्ठा,
ग्रन्थिभ्यो धारिणो वराः।
धारिभ्यो ज्ञानिनः श्रेष्ठा,
ज्ञानिभ्यो व्यवसायिनः।।48।।

(मनुस्मृतिः.12-103)

अशिक्षितों की अपेक्षा पुस्तकें पढ़ने वाले श्रेष्ठ हैं। पुस्तक पढ़ने वालों से उनके अर्थ को आत्मसात् करने वाले श्रेष्ठ हैं, ग्रन्थों के अर्थ को समझने वालों की अपेक्षा उनके ज्ञानी श्रेष्ठ हैं। ज्ञानियों की अपेक्षा अर्थ को कार्यान्वित करने वाले श्रेष्ठ हैं।

The readers of books are better than the illiterats; those who understand the meaning of the book are better than the readers; those who have knowledge are better than those who grasp the meaning of the books; and those who put it into practice are still better.

© NCERT not to be republished

श्लोकानुक्रमणी

श्लोकादि	पृ. संख्या
अज्ञेभ्यो ग्रन्थिनः श्रेष्ठा.....	48
अथ ये संहता.....	36
अद्भिर्गात्राणि.....	20
अप्राप्तकालं वचनं.....	15
अर्थानामर्जने.....	28
अल्पानामपि वस्तूनां.....	37
अष्टौ गुणाः पुरुषं.....	24
उत्साहसम्पन्नम्.....	4
उदेति सविता ताम्रः.....	17
ऋषयो राक्षसीमाहुः.....	30
एकेनापि हि शूरेण.....	35
कामं प्रियानपि.....	21
कामान्दुग्धे विप्रकर्षत्य.....	31
खलः सर्षपमात्राणि.....	14
गायन्ति देवाः किल.....	18
गुणा गुणज्ञेषु गुणा.....	6

© NCERT not to be republished

वरं पर्वतदुर्गेषु..... 5
वश्येन्द्रियं जितात्मानं..... 10
विद्या नाम नरस्य..... 33
शरदि न वर्षति गर्जति..... 39
शान्तितुल्यं तपो नास्ति..... 45
शास्त्राण्यधीत्यापि..... 11
संगच्छध्वं संवदध्वं..... 47
सर्वद्रव्येषु विद्यैव..... 34
सर्वभूतदयावन्तो..... 12
सहसा विदधीत न..... 16

© NCERT not to be republished